उर्जावान आडवानी

31 December, 2007.

उर्जावान आडवानी

नाम : - लाल कृष्ण आडवानी
जन्म तारिख :- ०८ नवबंर, १९२७
जन्म समय :- ०८ : ३० सुबह
जन्म स्थान :- कराची पाकिस्तान

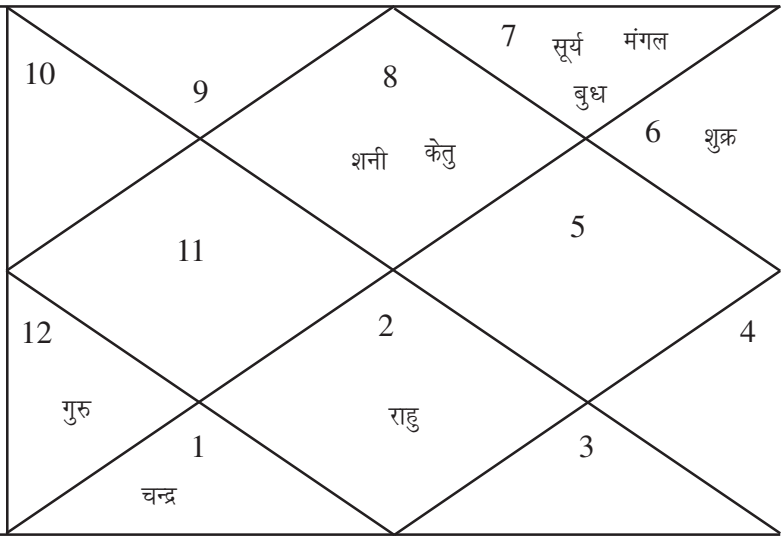

प्रतिदिन योगाभ्यास, शुध्द शाकाहारी, अल्पाहारी और मीठा खाने के शौकिन 'लाल कृष्ण आडवानी' अस्सी वर्ष की उम्र में भी चुस्त-फुर्त नजर आते हैं और आज के दौर में राजनितिक पटल पर प्रधान मन्त्री पद के प्रबल दावेदार हैं । प्रधान मन्त्री की उनकी दावेदारी की डगर 'कितनी आसान हैं और कितनी मुश्किल' ये हम उनकी कुण्डली के विश्लेषण से जानने का प्रयास करेगें ।

लालकृष्ण का जन्म ०८ नवबंर, १९२९ को कराची पाकिस्तान में हुआ था । १९४७ में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के बंटवारे के दौरान उन्हौने आर एस एस को कराची में संगठित किया था बाद में राजस्थान में एक सगंठनकर्ता के रुप इसे चलाते रहे । इसके बाद डॉ मुखर्जी ने १९५१ में जब जनसंघ की स्थापना की तो आडवानी इसके राजस्थान प्रान्त के सेक्रेटरी बने । मुबंई युनिवर्सिटी से उन्हौने कानून की पढ़ाई पुरी की हालाकि पेशे के तौर पर उन्हौने वकालत नही की परन्तु १९७४ में अपनी पार्टी की ओर से सुप्रिम कोर्ट में वकालत की थी जब गुजरात विधान सभा भंग कर दी गई थी । किताबें पढ़ने का भी उन्हे शौक हैं और उनकी एक अच्छी कलेक्शन उनके पास हैं । १९८९ में वे राज्यसभा के मेंबर बने १९९१ में वे लोकसभा के लिये चुने गये और विरोधी पक्ष के नेता बने । १९७७ में जनता पार्टी की सरकार में वे सूचना एंव प्रसारण मन्त्री बने । इसके बाद अभी कुछ वर्ष पहले तक रही जनता पार्टी की सरकार में वे गृहमन्त्री और उप प्रधानमन्त्री भी बने । कभी आडवानीजी को भारतीय जनता पार्टी के बृह्मा, विष्णु और महेश में से एक माना जाता था । आज वे भारतीय जनता पार्टी के सर्वोच्च नेता माने जाते हैं और प्रधान मन्त्री पद के प्रबल दावेदार हैं ।

श्री लाल कृष्ण आडवानी की कुण्डली वृश्चिक लग्न की हैं और इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में जाकर पितर दोष की रचना कर देता हैं । जिससे जीवन संर्घषमय और स्वनिर्मित बन जाता हैं । आडवानीजी की चन्द्र राशि मेष हैं और इसका स्वामी भी मंगल बन जाता हैं । इस तरह कुण्डली पुर्णरुप से मंगल से संचालित होती हैं और मंगल का प्रभाव आडवानीजी के स्वभाव में प्रकट होने लगता हैं । लक्ष्य को आँखों से ओझल ना होने देना और निंरतर संर्घष करते रहना मंगल का प्रभाव हैं । मंगल को ज्योतिष में सैनिक माना जाता हैं और इसके प्रभाव से आडवानीजी भी किसी सैनिक की तरह सदा ही पार्टी के लिये निष्ठावान और वफादार बने रहे हैं ।

वर्गोत्तम लग्न में वर्गोत्तम शनी के विराजमान होने से आडवानीजी को अच्छी सेहत और आयु मिली हैं । पंचम में स्वराशि के गुरु से इन्हे अच्छे पद मिले हैं और बुध अष्टमेश होकर द्वादश में विराजमान होने से इन्हे इसके विपरित राजयोग का फल मिला हैं और कई बार ये इसके अच्छे फलों से लाभान्वित हुऐ हैं । षष्ठ में चन्द्र विराजमान होने से इनके प्रयासों में सदा तेजी रही हैं । दरअसल १९७४ से आरंभ हुई राहु की महादशा और १९९२ से आरंभ हुई गुरु की महादशा आडवानीजी के लिये परम शुभ सिध्द हुई हैं । इन्ही महादशाओं में आडवानीजी की राजनितिक सफलता दृष्टिगोचर होती हैं । गुरु महादशा २००८ तक चलने वाली हैं और इसके लिये अब एक अंतिम वर्ष बचा हैं । गुरु एक परमशुभ, कारक ग्रह हैं और अगर आडवानीजी प्रधान मन्त्री बनते हैं तो यही एक वर्ष उन्हे इस उच्च पद तक पहुचा सकता हैं । इसके बाद आरंभ होने वाली शनी महदशा एक अकारक ग्रह की महदशा हैं और शनी रुकावटों से भरपुर केतु से युति बनाये लग्न में बैठा हैं । इस महादशा के पहले तीन वर्ष कोई विशेष फल नही दिखा पायेगें परन्तु इसके पश्चात इसमें चलने वाली बुध की अंतर्दशा विपरित राजयोग से कुछ चमत्कार दिखा सकती हैं ।

अगर हम पंडित जवाहरलाल नेहरु, श्रीलाल बहादुर शास्त्री, श्रीमति इंदिरा गाँधी, श्री मोरारजी देसाई, चौधरी चरणसिंह, श्री राजीव गाँधी, श्री वी पी सिंह, श्रीमान चन्द्रशेखर, श्री पी वी नरसिम्हा राव, श्री अटल बिहारी बाजपेई, श्री एच डी देवेगौड़ा और श्री इन्द्रकुमार गुजराल की कुण्डलियाँ देखें, जोकि अबतक के प्रधान मन्त्री रह चुके हैं तो हमे आडवानीजी की कुण्डली में कुछ योग और ग्रह नजर आयेगें जो उनके प्रधान मन्त्री बनने की समानता को दर्शायेगें ।

१, पाँच प्रधान मन्त्री कर्क लग्न के हैं । दो मिथुन लग्न के, दो धनु लग्न के, एक सिंह लग्न, एक कन्या लग्न और एक तुला लग्न का प्रधान मन्त्री हैं । जबकि आडवानीजी का लग्न वृश्चिक हैं । २, आँठ प्रधान मन्त्रीयों का सूर्य लग्न से केन्द्र में अथवा त्रिकोण में हैं । दो का उपचय स्थान में, एक का तृतिय में और एक प्रधान मन्त्री श्री वी पी सिंह का सूर्य द्वादश में हैं । आडवानीजी का सूर्य द्वादश में हैं और ये सर्वोच्च पद के लक्ष्य को कठिन बना देता हैं । ३, बारह प्रधान मन्त्रीयों में से आँठ प्रधान मन्त्रीयों का चन्द्रमाँ लग्न से केन्द्र में हैं । एक प्रधान मन्त्री का त्रिकोण में, एक का तृतिय में, एक का अष्टम में और एक प्रधान मन्त्री का चन्द्रमाँ द्वितिय में हैं । जबकि आडवानीजी का चन्द्र, लग्न से षष्ठ में विराजमान हैं और ये विचारों की भिन्नता को दर्शाता हैं । ४, आँठ प्रधान

उर्जावान आडवानी

31 December, 2007.

मन्त्रीयों का बुध, सूर्य के साथ हैं । दो का शुक्र के साथ हैं और दो प्रधान मन्त्रियों को बुध अकेला बैठा हैं । आडवानीजी का बुध भी सूर्य के साथ हैं और ये बुध दीमानी के खेल में दक्षता को प्रकट करता हैं । ५, सात प्रधान मन्त्रीयों का गुरु, पुरुष राशियों में हैं । पाँच प्रधान मन्त्रीयों का स्त्री राशियों में हैं । जबकि आडवानीजी का गुरु स्त्री राशि में हैं और ये रचनात्मकता के ईस्तेमाल में कमी को दर्शाता हैं । ६, छह प्रधान मन्त्रीयों का शुक्र स्वराशियों में हैं । पाँच प्रधान मन्त्रीयों का शत्रु राशियों में और एक प्रधान मन्त्री का मित्रराशि में हैं । जबकि आडवानीजी का शुक्र नीच राशि में हैं और ये व्यवहारिकता में कमी को दर्शाता हैं । ७, सात प्रधान मन्त्रीयों का शनी पुरुष राशियों में हैं । पाँच प्रधान मन्त्रियों का स्त्री राशियों में हैं । आडवानीजी का भी शनी स्त्री राशि में हैं और ये कठोरता से निर्णय लेने की कमी को दर्शाता हैं । ८, सात प्रधान मन्त्रीयों का राहु - केतु पुरुष राशियों में हैं । पाँच प्रधान मन्त्रीयों के स्त्री राशियों में हैं । आडवानीजी के राहु-केतु स्त्री राशियों में हैं और ये तिकड़मबाज होने से, मौकापरस्त होने से रोकते हैं । ९, सभी बारह प्रधान मन्त्रीयों की कुण्डलियों में ६३ बार ग्रह पुरुष राशियों में हैं और ४५ बार स्त्री राशियों में हैं । अर्थात अधिकतर ग्रह पुरुष राशियों में हैं जबकि यंहा आडवानीजी की कुण्डली में अधिकतर ग्रह स्त्री राशियों में हैं ।

ये विश्लेषण दर्शाता हैं कि अब तक बने प्रधान मन्त्रीयों की कुण्डलियों से अनुपातन आडवानीजी की कुण्डली कुछ भिन्न हैं । हालाकि हम देख चुके हैं कि आडवानीजी उप प्रधान मन्त्री के पद पर विराजमान रह चुके हैं और प्रधान मन्त्री बनना ही अब बाकि रह गया हैं जोकि उप प्रधान मन्त्री पद से एक सीढ़ी ही उपर रह जाता हैं । परन्तु सीधे ही अब तक बने बारह प्रधान मन्त्रीयों की कुण्डलियों से उनकी कुण्डली की तुलना की जाये तो अनुपात में कुछ कमी दृष्टिगोचर अवश्य होती हैं ।

अगर हम आडवानीजी की कुण्डली का और गहराई से विश्लेषण करें और सूर्य को प्रधानपद मान ले तथा चन्द्र को उपपद मान लें तो चलने वाली गुरु की महादशा संकेत करती हैं कि चन्द्र से पीछे रहकर गुरु, चन्द्र के लिये छादक बन जाता हैं । वंही सूर्य से षडअष्टक योग बनाकर सूर्य के लिये बाधक बन जाता हैं । वैसे भी ज्योतिष शास्त्र अनुसार सूर्य को राजा ग्रह और चन्द्र को रानी ग्रह कहा जाता हैं । इसी के चलते गुरु की महादशा में आडवानीजी उप प्रधान मन्त्री पद पर पहुचें परन्तु प्रधान मन्त्री नही बन सके । इस तरह गुरु की बाकि बची एक वर्ष की महादशा आडवानीजी के लिये प्रधानमन्त्री बनने की डगर आसान नही बनाने वाली हैं ।

बहरहाल आडवानीजी हमारे लिये आज भी किसी प्रधान मन्त्री से कम नही हैं और हमारी शुभकामनाऐं उनके साथ हैं । आशा हैं, वे अपने लक्ष्य सिध्द करने में सफल होगें और देश की राजनिति में अपनी भूमिका सशक्त ढंग से निभायेगें ।

Bhagyadisha Astrological Research Center - Phone : 02512550080 Mobile : 9809574444.
Disha complex 2nd floor, Kewalkunj apt. 17 sec. U.M.C. road Ulhasnagar 421003. Thane, Mumbai.